



Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 49-2024] CHANDIGARH, TUESDAY, DECEMBER 3, 2024 (AGRAHAYANA 12, 1946 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 22 नवम्बर, 2024

संख्या 12/250-2024/पुरा/4022-29.— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों तथा प्राचीन और ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है;

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हो, के साथ जो प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाएं, पर विचार करेगी।

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव / शहर का नाम	तहसील / जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा / किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
मिताथल (हड़प्पन) स्थल	मिताथल (हड़प्पन) स्थल	मिताथल	भिवानी	मुरब्बा संख्या 107 // 21 / 2, 112 // 1 / 1 खसरा संख्या 108 // 16 / 1	10-12 एकड़	2 कनाल 1 मरला व 2 कनाल 13 मरले गैर0 मु0 खेडा की मलकियत रामनिवास पुत्र टेका पुत्र महलु 1 कनाल 2 मरला गैर0 मु0 खेडा 25 // 2, 4 कनाल 19 मरला गैर0 मु0 खेडा की मलकियत रामकरण पुत्र नन्दराम पुत्र चन्दगी 11 / 45 भाग रामधन पुत्र नन्दराम पुत्र	यह स्थल भिवानी के उत्तर-पूर्व में 11 किमी की दूरी पर स्थित है। गांव तक पहुंचने के लिए भिवानी-जींद रोड पर तिगड़ाना से एक लिंक रोड है। 1968 में संचालित पुरातात्विक उत्खनन

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव / शहर का नाम	तहसील / जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा / किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र	स्वामित्व	विशेष कथन
						चन्दगी 23/90 भाग अनीता विधवा व लक्ष्य पुत्र रामनिवास पुत्र नन्दराम हर दो समभाग 23/90 भाग श्रीमती सन्तोष विधवा व आनन्द पुत्र रामकुमार पुत्र नन्दराम हर दो समभाग 11/45 भाग	के परिणामों ने तांबे-कांस्य युग की संस्कृति—तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के इंडो-गंगा विभाजन के परिसर प्रकाश डाला है।
				खसरा संख्या 108 / / 6		9 कनाल 7 मरले गैर0 मु0 खेडा 15 8 कनाल 0 मरला गैर0 मु0 खेडा 108 / / 16 / 2, 6 कनाल 16 मरला गैर0 मु0 खेडा की मलकियत महेन्द्र-देवेन्द्र सिंह अशोक पुत्रान रघवीर पुत्र हरपाल हर तीन समभाग 1/3 भाग वासीदेह सुरेन्द्र-विजेन्द्र पुत्रान रणधीर पुत्र हरपाल हर दो समभाग 1392 / / 6351 भाग फते पुत्र हरपाल पुत्र चन्दगी 2837 / / 6531 भाग वासीदेह	यह स्थल पहली बार 1913 में प्रकाश में आया जब गुप्त वंश के सबसे प्रसिद्ध राजाओं में से एक, समुद्र गुप्त के सिक्कों का एक भंडार पाया गया। 1965 से 1968 के दौरान, इस स्थल पर मोतियों और तांबे के उपकरण की खोज की गई, जिससे आधुनिक-ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हुई। मिताथल की खुदाई से नगर आयोजन, वास्तुकला और कला और शिल्प में हड़प्पा परंपरा का पता चलता है। मिट्टी के बर्तन अच्छी तरह से जला हुआ मजबूत लाल बर्तन था जिसे पीपल के पत्ते, मछली के शल्क और अन्य ज्यामितीय डिजाइनों के साथ काले रंग से चित्रित किया गया था।
				खसरा संख्या 108 / / 7		8 कनाल 9 मरला नहरी 14 8 कनाल 0 मरले नहरी 17, 8 कनाल 0 मरला नहरी 108 / / 25 / 1, 3 कनाल 1 मरला नहरी की मलकियत अभेराम पुत्र पतराम पुत्र चन्दगी 1/4 भाग सन्तोष विधवा व जयभगवान सुनील पुत्रान नरेन्द्र पुत्र अभेराम हर तीन समभाग 3/8 भाग वासीदेह राजेश पुत्र अभेराम पुत्र पतराम 605 / 2296 भाग अजय पुत्र राजेश पुत्र अभेराम 32 / 287 भाग	इस स्थल से मोती, चूड़ियाँ और टेराकोटा, पत्थर, शंख, तांबा, हाथी दांत और हड्डी की वस्तुएं जैसी विभिन्न प्रकार के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।
				खसरा संख्या 108 / / 23 / 2		8 कनाल 0 मरला गैर0 मु0 खेडा की मलकियत सुशील-मुकेश-कमलेश-उर्मिला पुत्रीया अजीत सिंह पुत्र धन्ना हर चार समभाग 7/18 भाग श्रीमती बिमला विधवा अजीत सिंह पुत्र धन्ना 7/24 भाग सुरेन्द्र पुत्र अजीत सिंह पुत्र धन्ना 23/144 भाग लक्ष्य पुत्र सुरेन्द्र पुत्र अजीत सिंह 23/144 भाग वासीदेह	

कला रामचंद्रन,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT
HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 22nd November, 2024

No. 12/250-2024/pura/4022-29.— Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains and ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below, to be a protected archaeological site and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, which may be received by the Principal Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh from any person with respect to the proposal before the expiry of the period so specified: -

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Mitathal (Harappan) Site	Mitathal (Harappan) Site	Mitathal	Bhiwani	Murba No. 107//21/2, 112//1/1 Khasra No. 108//16/1 Khasra No. 108//6 Khasra No. 108//7 Khasra No. 108//23/2	10-12 Acre	2 Kanal 1 Marla and 2 Kanal 13 Marla Gar Mumkin Khera ownership Ramniwas S/o Teka S/o Mehlu 1 Kanal 2 Marla Gar Mumkin Khera 25/2, 4 Kanal 19 Marla Gar Mumkin Khera ownership Ramkaran S/o Nandram S/o Chandgi 11/45 part Ramdhan S/o Nandram S/o Chandgi 23/90 part Anita widow and Lakshy S/o Ramniwas S/o Nandram every two part 23/90 part Smt. Santosh widow and Aanad S/o Rajkumar S/o Nandram every two part 11/45 part 9 Kanal 7 Marla Gar Mumkin Khera 15 8 Kanal 0 Marla Gar Mumkin Khera 108//16/2, 6 Kanal 16 Marla Gar Mumkin Khera ownership Mahender-Devender Singh Ashok S/o Raghvir S/o Harpal every 3 part 1/3 part vasideh Surender-Vijender S/o Randhir S/o Harpal every 2 part 1392//6351 part Fateh S/o Harpal S/o Chandgi 2837//6531 part vasideh 8 Kanal 9 Marla nahri 14 8 Kanal 0 Marla nahri 17, 8 Kanal 0 Marla nahri 108//25/1, 3 Kanal 1 Marla nahri ownership Abheram S/o Patram S/o Chandgi ¼ part Santosh widow and Jaibhagwan Sunil S/o Narender S/o Abheram every 0 part 3/8 part vasideh Rajesh S/o Abheram S/o Patram 605/2296 part Ajay S/o Rajesh S/o Abheram 32/287 part 8 Kanal 0 Marla Gar Mumkin Khera ownership Sushil-Mukesh-Kamlesh-Urmila D/or Ajit Singh S/o Dhanna every 4 part 7/18 part Smt. Bimla widow Ajit Singh S/o Dhanna 7/24 part Surender S/o Ajit Singh S/o Dhanna 23/144 part Lakshy S/o Surender S/o Ajit Singh 23/144 part vasideh	The site is situated at a distance of 11 km to the north-east of Bhiwani. The village is approached by a link road from Tigrana on the Bhiwani-Jind road. The results of archaeological excavation conducted in 1968 have thrown light on the Copper-Bronze age culture – complex of the Indo-Gangetic divide of the 3rd-2nd millennia B.C.E. The site came to light for the first time in 1913 when a hoard of coins of Samudra Gupta, one of the most illustrious kings of the Gupta dynasty, was found. During 1965 to 1968, beads and copper implements were discovered at the site, yielding proto-historic material. The excavations at Mitathal bear out the Harappan tradition in town planning, architecture and in arts and crafts. Pottery was well burnt sturdy red ware painted in black with pipal leaf, fish scale, and other geometric designs. The site has yielded a variety of antiquities such as beads, bangles and terracotta, stone, shell, copper, ivory and bone objects.

KALA RAMACHANDRAN,
Principal Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.